I J C R M

International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Review Paper

आधुनिक परिप्रेक्ष में नारीवाद: एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. नरेंद्र सीमतवाल[1*], महेन्द्र कुमार वर्मा[2]

[1]सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय कन्या महाविद्यालय, किशनगढ़, अलवर, राजस्थान, भारत

[2]राजनीति विज्ञान, अलवर, राजस्थान, भारत

Corresponding Authors: * **डॉ. नरेंद्र सीमतवाल**

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10907684

सारांश

यह शोध पत्र परिपेक्ष में एक समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन में, हम नारीवाद की प्राचीन और समकालीन परंपराओं को जांच रहे हैं, उनके विकास के संदर्भ में विचार कर रहे हैं, और आधुनिक समाज में नारीवाद की प्रभावी अनुप्रयोगिता पर ध्यान केंद्रित करते हैं। हम विभिन्न विचारधाराओं, सामाजिक अध्ययनों, और संदर्भों के माध्यम से नारीवाद की व्याख्याओं को विश्लेषण कर रहे हैं। अध्ययन के परिणाम से, हम नारीवाद के समझाने में एक नई दिशा प्रदान करते हैं और आधुनिक समाज में नारीवाद के प्रभाव को समझने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। हमने विभिन्न सांस्कृतिक, सामाजिक, और राजनीतिक प्रासंगिकताओं को ध्यान में रखकर नारीवाद के परिणामों को विश्लेषण किया है। हमने इस प्रयास में नारीवाद के विभिन्न आयामों को उजागर करने के लिए साक्ष्यात्मक और सांख्यिकीय तथ्यों का उपयोग किया है। अंत में, हमारा अध्ययन नारीवाद के महत्वपूर्ण संदेशों और समाज में इसके प्रभाव को समझने में मदद करेगा।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 28-02-2024
- **Accepted:** 29-03-2024
- **Published:** 02-04-2024
- **IJCRM:**3(2);2024:123-126
- **©2024, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Manuscript

डॉ. नरेंद्र सीमतवाल, महेन्द्र कुमार वर्मा. आधुनिक परिप्रेक्ष में नारीवाद: एक समीक्षात्मक अध्ययन. International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary.2024; 3(2): 123-126.

कूटशब्द: नारीवाद, सामाजिक व्यवस्था, विचारधारा, ट्रान्सजेन्डर, स्त्री, भगिनी समाज, समलैंगिकता, पूंजीवाद, कामुकता, पहचान, लैंगिक भेदभाव, दासता, पितृसतात्मक समाज।

प्रस्तावना

अनंत काल से एक ऐसी कहानी हमारे सम्मुख है जो पुरुष के प्रति स्त्री को पूर्ण पराधीनता का मनगढ़ंत सिद्धान्त गढ़ती है। नारीवादी विचारधारा की मान्यता है कि समाज में लिंग के आधार पर सत्ता या शक्ति का विस्तृत अर्थों में व्यवहार में लाया जाता है। यह मुख्य अर्थ में पितृतंत्र को सामाजिक व्यवस्था का लक्षण मानता है। समाज में पुरुष का प्रभुत्व या आधिपत्य चला आ रहा है। स्त्री एक उत्पीडित वर्ग है। पुरुष का उत्पीड़न सर्वव्यापक है। अनादि काल से यह परम्परा चली आ रही है। रामायण हो या महाभारत, या वैदिक ग्रन्थ, मनुस्मृति सभी ग्रन्थों में पहले इसी बात की पुर्नावृति होती है। नारीवादी विचारवाद पितृतंत्र या अन्य शब्दों में कहें तो पुरुष प्रधान समाज के प्रति विद्रोह का शंखनाद है। यह नारी को एक भगिनी समाज के रूप में संगठित करना चाहती है। ऐसा समाज जो सभी वर्गों की सीमाओं से दूर है। वर्ग से आशय है प्रजातियां, निर्धन, धनवाद, श्वेत-अश्वेत। नारीवाद का दृष्टिकोण यही है कि स्त्री को अपने स्त्रीत्व के कारण परीक्षाएं या सतीत्व का सामना करना होता है। अन्याय सहन करना पड़ता है और स्त्रीत्व के कारण अन्याय का शिकार हो रही हैं।

© 2024 डॉ. नरेंद्र सीमतवाल, महेन्द्र कुमार वर्मा. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

नारीवाद का इतिहास

नारीवाद आंदोलन 1970 के दशक में शुरू हुआ तथा स्त्री पुरुष का विवाद प्राचीन समय से चला आ रहा है। पौराणिक ग्रन्थ में भी विरोधाभास है चाहे मनुस्मृति हो या रामायण या गीता। मध्य युग में भी स्त्री की दयनीय स्थिति रही है। इस युग में ईसाईयत या पोप का प्रभुत्व रहा है। संपत्तिशाली वर्ग का आधिपत्य रहा है। संक्षिप्त शब्दों में कहें तो धर्म का प्रभुत्व रहा है। जहां स्त्री या नारी को भगिनी समाज का रूप नहीं दिया गया, राजनीतिक रूप से ये भी दूर रही हैं, यही नहीं सामाजिक स्तर पर भी इन्हें केवल चूले-चौकी तक सीमित रखा गया है।

तुलसीदास कृत रामचरितमानस में भी विरोधाभास है। एक तथ्य रामचरितमानस में राम एवं कैकई का महिमामंडल किया गया है दूसरी तरफ प्लेटो स्त्री और पुरुष को समान मानता है वहीं अरस्तु दोनों को असमान मानता है।

उदारवादी नारीवाद

नारीवादी आंदोलन के प्रारम्भिक संकेत 18-19 वीं शताब्दी में यूरोपीय चिंतन में ढूंढे जा सकते हैं। मेरी वाल्हलटन क्राफ्ट ने अपनी कृति इंडिकेशन ऑफ़ द राइज़न ऑफ़ वूमेन, में स्त्रियों को वैधानिक, राजनीतिक क्षेत्रों में तथा सामाजिक क्षेत्रों में समानता प्रदान करने का औचित्य स्थापित था। जॉन स्टुअर्ट मिल ने चर्चित कृति सब्जेक्शन ऑफ़ वीमेन के अन्तर्गत यह तर्क दिया की स्त्री और पुरुष का संबंध मैत्रीपूर्ण होना चाहिए। मिल ने हीराजनीतिक क्षेत्र में स्त्रियों को मताधिकार की बात कही।

19 वीं शताब्दी में मार्क्सवादी विचारधारा ने माना श्रम विभाजन या पूंजीवादी प्रणाली नारी का शोषण का यन्त्र है। मार्क्सवाद की मान्यता है कि जब पूँजीवादी व्यवस्था धराशाही हो जाएगी तब स्त्रियां सार्वजनिक जीवन में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर सकेंगे। बेट्टी फ्रीडन जिन्हें महिला मुक्त की जन्मदाता भी कहा जाता है ने अपनी रचना, द फिमिनिन मिस्टीक (1963) में कहा है कि स्त्रियों को भी स् स्वायत्तता और आत्मनिर्णय का अधिकार मिलना चाहिए।

आमूल परिवर्तनवादी नारीवाद

यह विचारधारा द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शुरू हुई। यह विचारधारा सामाजिक व्यवस्था की जाता स्थिति में आमूल परिवर्तन की मांग करती है। इस विचारधारा में विचारक शुक्ल मिथ, फायर स्टोन, केट मिलेट की पुस्तक सैमुअल पॉलिटिक्स (1970) में कहा है कि स्त्री पर पुरुष का नियंत्रण जीव वैज्ञानिक अंतर की देन नहीं है बल्कि सामाजिक संरचना का परिणाम है।

फ्रांसीसी नारीवादी लेखक सिमोन द बुआ ने अपनी चर्चित कृति द सेकंड सेक्स में कहा है कि ए वुमन इस नोट बॉर्न बट मेड, स्त्री पैदा नहीं होती बल्कि उसे ऐसा बना दिया जाता है।

समाजवादी नारीवाद

समाजवादी नारीवाद को मानने वाले प्रमुख विचारकों में चार्ल्स फ्यूरिया, फेडरिक एंगल्स, शीला एन्डस्लम आदि शामिल हैं। शीला एंडस्लम की प्रमुख कृतियां हैं विमैन, रजिस्ट्रेशन एंड रिवॉल्यूशन और हिडन फ्रार्म हिस्ट्री, इतिहास का छिपा हुआ चेहरा।

इनका मानना है की नारी मुक्ति का संघर्ष वस्तुतः पूंजीवाद विरोधी संघर्ष की एक हिस्सा है। एंगेल्स ने अपनी पुस्तक 'आरिजन ऑफ द फैमिली प्राइवेट प्रापर्टी एण्ड द स्टेट (1884) में तर्क दिया कि समाजवाद के आगमन से निजी - सम्पति का अन्त हो जायेगा जिससे स्त्रियों को गृह कार्य के भार के मुक्ति मिल जायेगी।

उत्तर आधुनिक नारीवाद

यह एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है जो उत्तर आधुनिक और बाद के संरचनात्मक सिद्वान्तों को शामिल करता है। उत्तर आधुनिक नारीवाद की शुरुआत 1980 में मानी जाती है। फूको, सीमोन, लूज इरिगारे और जूलिया क्रिश्टेया जैसे लेखकों ने उत्तर आधुनिक नारीवाद की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उत्तर आधुनिक नारीवाद वर्ग, कामुक्ता, धर्म, पहचान, लिंग, समलैंगिकता संबंधी जटिल बहस के मुद्दों को लेकर महिलाओं अधीनता और अन्य मुद्दों से निपटने की दिशा में कोई भी एक दृष्टिकोण उत्पन्न कर लेता है और कोई भी एक इष्टिकोण उत्पन्न कर लेता है और कोई भी एक कारण में न होने का निष्कर्ष निकलता है।

उत्तर-औपनिवेशिक नारीवाद

यह नस्लवाद, गैर सफेद और गैर पश्चिमी महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ में उनके प्रभाव के साथ उपनिवेशवाद पर केंद्रित है। अतीत में उपनिवेशवाद के तहत महिलाओं की समस्या का समाधान करने की कोशिश में उभरा। इसको मानने वालों में प्रमुख विचारक अरुंधति राय, जय श्री, स्पीवक, उमा नारायण, कुमकुम संगारी, लतामणी आदि शामिल हैं।

सांस्कृतिक नारीवाद

किशोर लड़कियों के दृष्टिकोण को केंद्रीय करण जिसमें उन्हें स्वयं को पूरी तरह से व्यक्त करने की अनुमति मिले। लिपस्टिक नारीवाद एक साँस्कृतिक नारीवादी आन्दोलन है जो 1960 के और 1970 के दशक की दूसरी लहर के कटरपंथी नारीवाद की प्रतिक्रिया का जवाब देने के लिए मेकअप, उत्तेजक अपड़े आर यौन आकर्षण जैसे 'स्त्री' पद के प्रतीकों ह को पुनः प्राप्त करने प्रयास करता है।

ट्रान्सजेन्डर लोग

ट्रान्सजेन्डर लोगों पर नारीवादी विचार भिन्न है। कुछ नारीवादी 'विचारक ट्रान्सजेंडर लोगों की महिलाओं के रूप में नहीं देखते क्योंकि जन्म के समय उन्के लिंग के कारण उन्हें अभी भी कुछ पुरष अधिकार प्राप्त हैं। इसके अतिरिक्त कई नारीवादियों का मानना है कि लिंग परिवर्तन महिलाओं की मुक्ति का नारीवादी लक्ष्यों का एक आवश्यक हिस्सा है। नारीवाद की तीसरी लहर ट्रांसजेन्डर लोगों के अधिकारों का अधिक समर्थन करते हैं।

भारत का नारीवाद

भारत का नारीवादी आन्दोलन 19 वीं शताब्दी के सामाजिक सुधार आन्दोलन और राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ा हुआ है। राजा राममोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानंद, ज्योतिबा फुले, सावित्री बाई फुले, फातिमा शेख, ताराबाई शिंदे, स्वामी

© 2024 डॉ. नरेंद्र सीमतवाल, महेन्द्र कुमार वर्मा. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

दयानंद सस्वती, पंडिता रमाबाई, सर सैय्यद अहमद ने विभिन्न संगठनों के माध्यम से स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह और स्त्री अधिकार जैसे प्रश्नों को प्रमुखता दी।

1929 में शारदा एट जैसे कानूनी सुधार हुए। महात्मा गाँधी और डॉ अम्बेडर ने जाति प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा, प्रसूती अवकाश, मताधिकार, समानता का अधिकार, बालविवाह, लेंगिक विभेदता की अन्न के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में व्यवहारिक प्रयास किया।

इस दौर में प्रमुख नारीवादियों में कामिनी रॉय, दुर्गाबाई, सरला देवी चौधरानी थी। वर्तमान में भारतीय नारीवादी विचारकों में गीता सहगल, निवेदिता मेनन, मेघाना पंत देसाई प्रमुख रूप से हैं।

वैधानिक दृष्टि से भारत में स्त्री सशक्तिकरण हेतु महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं यथा -

- पैतृक संपत्ति में अधिकार।
- सती प्रथा, बाल विवाह, दहेज प्रथा पर रोक।
- यौन शोषण से बचाव हेतु प्रावधान।
- अंतर्राज्यीय विवाह का समर्थन।
- पंचायत समिति स्तर पर महिलाओं को आरक्षण।
- संसद में महिलाओं का 35% आरक्षण
- महिला पुरुष का समान वेतन।
- शिक्षा का अधिकार इत्यादि।

वर्तमान में चुनैतियाँ

वैधानिक प्रावधानों के बावजूद भी नारी उतनी सशक्त नहीं हो पायी है जो नारीवादी चाहते हैं । क्योंकि अभी भी पूरी तरह लोगों का मानसिक परिवर्तन नहीं हुआ है । आधुनिक समाज में भी प्रमुख चुनौतियां निम्नलिखित रूप में दिखाई देते हैं:-

- स्त्रियों के प्रति बनाई रूढ़ अवधारणाएं तथा पूर्वाग्रह ।
- समाज में स्त्रियों से किए जाने वाला लैंगिक भेदभाव ।
- समाज में विद्यमान असमानता और स्त्रियों के शोषण की समाप्ति के विचार पर नारीवादियों के मध्य असहमति ।
- पितृसत्तात्मक समाज की समाप्ति के तरीके पर नारीवादियों के मध्य असहमति ।

समाधान

शिक्षा और सशक्तिकरण: नारीवाद के लिए शिक्षा को प्राथमिकता देना । समाज में महिलाओं को शिक्षित और स्वावलंबी बनाने के लिए शिक्षा के प्रवाह को बढ़ावा देना।

कानूनी सुरक्षा: महिलाओं के अधिकारों की संरक्षण के लिए कड़ी कानूनी कार्रवाई और प्रभावी कानूनों की शृंखला को लागू करना।

सामाजिक जागरूकता: समाज को महिलाओं के साथ उचित और समान व्यवहार के महत्व को समझाने के लिए जागरूक करना।

महिला उद्यमिता: महिलाओं को उद्यमिता की सामर्थ्य और स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए उद्यमिता को बढ़ावा देना।

प्रेरणात्मक उदाहरण: महिलाओं के सफलता के उदाहरणों को प्रमोट करना और समाज में प्रेरणा देना।

धार्मिक सहयोग: धार्मिक आधार पर महिलाओं के अधिकारों को समर्थन देने वाले धर्मिक संगठनों के साथ सहयोग करना।

संगठनित प्रयास: समाज में महिलाओं के हित में काम करने वाले संगठनों और गैर-सरकारी संगठनों को समर्थन देना ।

इन समाधानों का अनुसरण करते हुए, हम महिलाओं के साथ समानता और न्याय की दिशा में सामाजिक सुधार कर सकते हैं।

शोध पद्धति

पहले, संदर्भ और संग्रह अध्ययन के लिए आवश्यक सामग्री का चयन किया गया। इस संग्रह में मुख्यतः पुस्तकें, लेख, और पूर्वाध्ययनों को शामिल किया जो नारीवाद के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं ।

अध्ययन के शुरुआती चरण में, चयनित सामग्री को समीक्षा और विश्लेषण किया गया। इस चरण में, अध्ययनकर्ता नारीवाद के प्रमुख सिद्धांतों, विचारधाराओं, और समस्याओं को समझने का प्रयास किया । अध्ययन के इस चरण में, नारीवाद के सिद्धांतों और विचारधाराओं को व्यावसायिक और सामाजिक संदर्भ में लागू किया गया। विभिन्न मेथडोलॉजी का उपयोग किया, जैसे कि सांविधिक अध्ययन, साक्षात्कार, और समाजशास्त्रीय अध्ययन।

निष्कर्ष

स्त्रियों में हीन स्थिति सामाजिक व्यवस्था की उपज है ने की प्राकृतिक व्यवस्था की देन। स्त्री शिक्षा को प्राथमिकता दिए जाने पर खेलकूद तथा सैनिक सेवाओं में महिलाओं की भागीदारी सामाजिक अधिकारों से महिलाएं सशक्त हुई हैं ।

विभिन्न देश, काल और वातावरण के प्रभावित होते के फलस्वरूप अपने-2 परिवेश के अनुसार नारीवादी सिद्धान्तों की विभिन्न धाराएँ अपने महत्वपूर्ण उद्देश्यों को पूर्ण कर महिलाओं के जीवन को स्पंदित, खुशनुमा कर रही हैं ।

नारीवादी एक न एक दिन इस विश्व की 3/4 आबादी को अधिकार तथा सम्मान से महिलाओं को सुसज्जित करेगा। यह विचारधारा पुरुष विशेष अधिकार और स्त्री अधीनीकरण के आलोचनात्मक विश्लेषण पर आधारित है। आज आवश्यकता इस बात की है कि स्त्रियों को न तो दया का पात्र समझा जाये और न दासता का विषय बनाया जाए।

हितों का टकटाव: शून्य

स्वीकृति:

हम इस सुझाव को स्वीकार करते हैं। नारीवाद के आधुनिक परिपेक्ष में एक समीक्षात्मक अध्ययन का आयोजन किया जाना चाहिए। इस अध्ययन से नारीवाद के विभिन्न पहलुओं को समझने में मदद मिलेगी और समाज में इसके संभावित प्रभावों को विश्लेषित किया जा सकेगा। यह अध्ययन महत्वपूर्ण ज्ञान प्रदान करेगा जो समाज की समग्र उन्नति और समानता की दिशा में सहायक होगा ।

© 2024 डॉ. नरेंद्र सीमतवाल, महेन्द्र कुमार वर्मा. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नारीवाद चौथी लहर, एनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटानिका, 21, मई, 2019.
2. अस्मिता एवं अस्मिता मूलक विमंत्र, एक सिद्धांत की अवधारणा, हिंदी आलेख, 20 फरवरी 2023.
3. De Beauvoir S. The Second Sex. Vintage Books; 1953.
4. Butler J. Gender Trouble: Feminism and the Subversion of Identity. Routledge; 1990.
5. hooks b. Feminist Theory: From Margin to Center. South End Press; 1984.
6. Mohanty CT. Under Western Eyes: Feminist Scholarship and Colonial Discourses. Feminist Review. 1988;30(1):61-88.
7. Sen A. Development as Freedom. Oxford University Press; 1999.
8. Butler J. Gender Trouble: Feminism and the Subversion of Identity. Routledge; 1990.
9. hooks b. Feminist Theory: From Margin to Center. South End Press; 1984.
10. Crenshaw K. Mapping the Margins: Intersectionality, Identity Politics, and Violence against Women of Color. Stanford Law Review. 1991;43(6).
11. De Beauvoir S. The Second Sex. Vintage Books; 1953.
12. Gilligan C. In a Different Voice: Psychological Theory and Women's Development. Harvard University Press; 1982.
13. Spivak GC. Can the Subaltern Speak? In: Nelson C, Grossberg L, eds. Marxism and the Interpretation of Culture. University of Illinois Press; 1988.
14. Lorde A. The Master's Tools Will Never Dismantle the Master's House. In: Sister Outsider: Essays and Speeches. Crossing Press; 1984.
15. Davis AY. Women, Race & Class. Vintage Books; 1983.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2024 डॉ. नरेंद्र सीमतवाल, महेन्द्र कुमार वर्मा. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/